वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान
पी.बी.नं.1061, आर एस पुरम, कोयम्बत्तूर - 641 002.

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, अप्रैल 1988 में वन अनुसंधान केन्द्र कोयम्बत्तूर और दक्षिण भारत के विभिन्न भागों में स्थित अन्य शोध विभाग एवं कॉलेज के द्वारा निर्मित हुआ। यह भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, पर्यावरण एवं वन मन्त्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद के अंतर्गत कार्यरत है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद का मुख्य लक्ष्य वनों से संबंधित मुद्धों के निपटान हेतु ज्ञान, तकनीकी और समाधानों को उत्पन्न करना, संरक्षित करना, बांटना और प्रसार करना और अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के द्वारा धारणीय आधार पर वन, पर्यावरण तथा लोगों के मध्य अंतक्रिया से उत्पन्न अंतर्सम्बन्धों को बढावा देना आदि है।

आदेश :

आदेशित नगरो में आनुवंशिक भिन्नता का मूल्यांकन करना, पश्चिम एवं पूर्व घाटों की वनों एवं द्वीप वनों की विभिन्नता को पहचानना और वनों में उपलब्ध देशज वर्गों के लिये उत्पादकता वृद्धि पर कार्य करना, जैव विविधता संरक्षण के अतिरिक्त अधिक आर्थिक के, चुने हुए असाधारण वर्गों पर कार्य करना और आजीविका वृद्धि में योगदान देना एवं वृक्ष पर आधारित उद्योग में होने वाले कार्यक्रमों में विकास करना है। इसके अतिरिक्त वन विभागों, उद्योगों और आदेशिक नगरों के अन्य हिस्सेदारों के द्वारा सामना किये जाने वाली समस्याओं पर भी वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान कार्य करेगा।

आधिकारिक राज्य :

तमिलनाडु, केरला, पुदुचेरी, अन्दमान और निकोबार द्वीप और लक्षद्वीप।

आधारभूत प्रयोगशालाएँ	सुविधाएँ
आनुवंशिकी सुधार	परीक्षण स्थल
डीएनए फिंगरप्रिंटिंग	संवर्धन स्थान
जिनोमिक्स	वानस्पतिक प्रसारण परिसर
ऊंतक संवर्धन	ग्लास हॉउस अण्ड मिस्ट चेम्बर
कक्षिका संवर्धन	ओपन टॉप चेम्बर
कीट विज्ञान	बीज बैंक और बीज संसाधन इकाई
कीट विकृति विज्ञान	वनस्पति संग्रहालय
विकृति विज्ञान	वानस्पतिक उध्यान
पादप रसायन शास्त्र	पुस्तकालय
पादप स्वास्थ्यकर	परिकलक प्रयोगशाला
बीज परीक्षण	सूक्ष्मदर्शिकी और बिंब विश्लेषण
भूमि और जल	पीसीआर प्रयोगशाला

अनुसंधानिक उपलब्धियाँ :

वन विभागों, वन विकास निगमों, काष्ट पर आधारित उध्यमों, किसानों और अन्य उपभोक्ताओं को आनुवंशिक रूप से उन्नत बीजों की आपूर्ति की जा रही है जो कि सुनिश्चित रूपसे काष्ट उत्पादन में निलगिरि के लिये 17% और विलायती सारू में 28% वृध्दि हुई है। उत्पादकता में आगे की सुधार के लिये दूसरी पीढी की प्रजनन प्रगति में है।

विलायती सारू, सी.जुंगुनियाना, नीलगिरि, बबूल के प्रजातियों और सागौन आदि के लिये बीज उपवनों को विकसित किया गया है। उद्गम और प्रजातियों के अच्छे प्रतिरूप के संयोजन से नीलगिरि, विलायती सारू और इमली में बेहतर फल प्राप्त करने और लकडी की लुगदी में फास्ट ट्रैक सुधार प्राप्त करने के लिये आंतर और अंतर विशिष्ट संकर का निर्माण किया गया है। विभिन्न कृषि जलवायु क्षेत्रों में संकर का परीक्षण किया जा रहा है।